डॉ राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच.डी. जैन कॉलेज, आरा

-------------------+------------------

भारत की शिक्षा प्रणाली, प्राचीन काल से आधुनिक काल तक

----------------------+--------------------

भारत को सदैव ज्ञान और शिक्षा की भूमि माना गया है। यहां की शिक्षा प्रणाली न केवल देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन को दिशा दी, बल्कि समूचे विश्व को ज्ञान के क्षेत्र में मार्गदर्शन किया है। समय के साथ-साथ शिक्षा की प्रकृति, उद्देश्य, विधियां और संस्थाएं परिवर्तित होती गई-जिससे भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास कई चरणों में हुआ।

प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली 1500 ई.पू. से 1200 ई तक :

वैदिक कालीन शिक्षा :

----

* उद्देश्य - व्यक्ति के सर्वांगीण विकास (शरीर, मन और आत्मा) पर बल।

* संस्थान - गुरुकुल प्रणाली प्रमुख थी। छात्र गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे।

* विषय - वेद, उपनिषद, व्याकरण, खगोल, गणित, तर्कशास्त्र, दर्शन, चिकित्सा, संगीत इत्यादि।

* शिक्षण विधि - मौखिक परंपरा पर आधारित थी, जिसमें श्रुति और स्मृति पर अधिक बल दिया जाता था।

* गुरु - शिष्य संबंध - अत्यंत घनिष्ठ एवं आत्मीय थे। गुरु छात्रों को नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की शिक्षा प्रदान करते थे।

उत्तर वैदिक और बौद्ध कालीन शिक्षा :
----

* इस समय के प्रमुख शिक्षा केंद्र थे - तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी और औदंतपुरी इत्यादि।

* नालंदा और विक्रमशिला विश्वविख्यात विश्वविद्यालय थे।

* बौद्ध शिक्षा की प्रमुख विशेषताएं थीं -

1. शिक्षा सभी के लिए खुली थी, इनमें स्त्रियां और निम्न वर्ग के लोग भी शामिल थे।

2. नैतिक अनुशासन, ध्यान और आत्म- संयम पर बल दिया जाता था।

3. पाली, भाषा माध्यम के रूप में प्रयोग हुई थी।

4. बौद्ध संघों और विहारों में शिक्षा दी जाती थी।

मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली 1200 ई. से 1757 ई. तक :

इस्लामी और मुगलकालीन शिक्षा :
----

* संस्थान - प्राथमिक शिक्षा के लिए 'मक्तब' और उच्च शिक्षा के लिए 'मदरसा'।

* विषय - कुरान, अरबी, फारसी, गणित, खगोल, इतिहास, दर्शन, चिकित्सा, संगीत इत्यादि।

शिक्षा का उद्देश्य :
----
* धार्मिक ज्ञान, प्रशासनिक सेवा और नैतिक आचरण का विकास करना।

विशेषताएं :
----
1. शिक्षा नि:शुल्क थी,

2. छात्रवृत्तियां अर्थात वजीफे दिए जाते थे।

3. शिक्षा का माध्यम अरबी और फारसी थी।

4. अकबर और औरंगजेब के काल में शिक्षा को राज्य का संरक्षण प्राप्त था।

4. आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली 1757 से वर्तमान तक :

ब्रिटिश कालीन शिक्षा प्रणाली :

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन हुए।

1. प्रारंभिक दौर (1757-1813 ई.) -

ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य उद्देश्य भारतीयों को अंग्रेजी भाषा व पाश्चात्य विचारों से परिचित कराना था ताकि वह प्रशासनिक कार्यों में सहयोग कर सकें।

2. चार्टर एक्ट 1813 -
----

* पहली बार सरकार ने शिक्षा के लिए एक लाख रुपए वार्षिक राशि निर्धारित की थी।

* ईसाई मिशनरियों को शिक्षण कार्य की अनुमति मिली।

3. मैकाले की शिक्षा नीति (1835) -
----

* "अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम बने"- यह मैकाले का प्रसिद्ध प्रस्ताव था।

* इसका उद्देश्य था - भारतीयों को ऐसा बनाना जो रंग-रूप से भारतीय, किंतु विचारों से अंग्रेज हों।

* इस समय भारतीय भाषाओं की उपेक्षा हुई और अंग्रेजी माध्यम प्रमुख बन गया।

4. चार्ल्स वुड का डिस्पैच, 1854 -
----
* इसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा गया।

* विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई - सर्वप्रथम कलकत्ता, बंबई और मद्रास में।

* शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान और महिला शिक्षा पर बल दिया गया।

* शिक्षा विभाग की स्थापना हुई।

5. हंटर आयोग, 1882 -
----
* इसने प्राथमिक शिक्षा के बिस्तर पर बल दिया।

* स्थानीय निकायों को शिक्षा के दायित्व सौंपे गए।

6. सैडलर आयोग, 1917 - 19 -
----
* इसने माध्यमिक और विश्वविद्यालय शिक्षा में सुधार हेतु सुझाव दिया।

* इस आयोग ने 12 वर्ष तक की स्कूली शिक्षा + 3 वर्ष की डिग्री पाठ्यक्रम की सिफारिश की।

7. वर्धा शिक्षा योजना, 1937 -

----

* महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित "नई तालीम" योजना।

* शिक्षा को कार्य अर्थात हस्तशिल्प से जोड़ने की परिकल्पना।

5. स्वतंत्रता के बाद की शिक्षा प्रणाली, 1947 से वर्तमान तक -

A. राधा कृष्ण आयोग (1948 - 49) -

* यह आयोग उच्च शिक्षा सुधार हेतु गठित की गई थी।

* इस आयोग ने विश्वविद्यालयों में अनुसंधान और नैतिक शिक्षा पर बल दिया।

B. कोठारी आयोग, (1964 - 66) -

* शिक्षा को राष्ट्र विकास का साधन माना।

* 10 + 2 + 3 प्रणाली की सिफारिश की।

* समान अवसर, विज्ञान शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया।

C. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968 -

* यह स्वतंत्र भारत की शिक्षा से संबंधित पहली राष्ट्रीय नीति थी।

* इसके द्वारा तीन भाषा सूत्र लागू किया गया।

* शिक्षक प्रशिक्षण और राष्ट्रीय एकता पर बल दिया गया।

D. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 (संशोधित 1992) -

* शिक्षा को मानव संसाधन विकास से जोड़ा गया।

* सर्वशिक्षा अभियान (SSA) और महिला साक्षरता पर बल दिया गया।

E. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 -

* नवीनतम शिक्षा नीति, जो शिक्षा को सर्वांगीण, लचीला, बहु-विषयक और कौशल आधारित बनती है।

* 5 + 3 + 3 + 4 संरचना लागू।

* मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और उच्च शिक्षा में बहुविकल्पीय प्रवेश - निकास प्रणाली लागू।

* राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान (NRA) की स्थापना का प्रस्ताव।

6. निष्कर्ष :

भारत की शिक्षा प्रणाली ने हजारों वर्षों की यात्रा तय कर ली है। गुरुकुल की मौखिक शिक्षा से लेकर डिजिटल युग की बहू विषयी शिक्षा तक। प्राचीन काल में जहां शिक्षा का उद्देश्य - आत्मज्ञान और चरित्र निर्माण था, वहीं आज का लक्ष्य ज्ञान, कौशल और नवाचार के

माध्यम से वैश्विक नागरिक का निर्माण करना है। इस विकास यात्रा ने भारतीय शिक्षा को सतत रुप से परिवर्तित और समृद्ध किया है।